दक्षिणी छोटानागपुर के शैक्षणिक विकास में गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं का योगदान: एक अध्ययन (2000 ई०–2020 ई०)

सामाजिक विज्ञान संकाय के अंतर्गत इतिहास विषय में पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रारूप

निदेशक
जगदीश लोहरा
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
जे एन कॉलेज, धुर्वा

शोधार्थी
सादिया खातून
9572865907
विश्वविद्यालय इतिहास
विभाग
रांची विश्वविद्यालय, राची

दक्षिणी छोटानागपुर के शैक्षणिक विकास में गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं का योगदानः एक अध्ययन (1947 ई०–2020 ई०)

(1) विषय की वस्तु स्थितिः

दक्षिणी छोटा नागपुर झारखंड राज्य का एक प्रमंडल है। झारखंड राज्य में कुल 24 जिले हैं। राज्य की 24 जिलों को पांच प्रमंडलों में बांटा गया है– उत्तरी छोटा नागपुर प्रमंडल, दक्षिणी छोटा नागपुर प्रमंडल, संथाल परगना प्रमंडल, पलामू एवं कोल्हान प्रमंडल में बांटा गया है। झारखंड राज्य की राजधानी रांची एवं उप राजधानी दुमका को बनाया गया है। 15 नवंबर 2000 को भारत के 28 वें राज्य के रूप में झारखंड राज्य का गठन हुआ। इससे पहले झारखंड बिहार का एक हिस्सा था। झारखंड भारत के पूर्वी क्षेत्र में बना एक राज्य है। यह जनजातीय बहुल प्रदेश के लिए जाना जाता है। झारखंड का क्षेत्रफल 79,716 वर्ग किलोमीटर है। राज्य के उत्तर से दक्षिण की लंबाई 380 किलोमीटर तथा पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई 463 किलोमीटर है। इसके उत्तर में बिहार पश्चिम में उत्तर प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ पूर्व में पश्चिम बंगाल तथा दक्षिण में उड़ीसा राज्य स्थित है। झारखंड की कुल आबादी 3,29,88,134 है। भारत की कुल आबादी का 2.72 प्रतिशत आबादी झारखंड में निवास करती है। झारखंड का की साक्षरता दर 66.41 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष साक्षरता दर 76.84 प्रतिशत और महिला साक्षरता दर 55.42 प्रतिशत है। झारखंड में सबसे ज्यादा साक्षरता रांची का है, जो दक्षिणी छोटा नागपुर का एक जिला है। दक्षिणी छोटा नागपुर में 5 जिले शामिल हैं– रांची, गुमला, लोहरदगा, खूंटी, सिमडेगा।

रांची जिला– रांची में कुल 18 प्रखंड है। इसका गठन 1899 ई. में हुआ था और क्षेत्रफल 5097 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। रांची का कुल जनसंख्या 29,14,253 है, इस जिला में झारखंड की सबसे ज्यादा जनसंख्या पाई जाती है। यहाँ की साक्षरता दर 84.20ः प्रतिशत है, जिसकी महिला साक्षरता दर 67.44 प्रतिशत तथा पुरुष साक्षरता दर 76.84 प्रतिशत है, जो पूरे झारखंड में सबसे ज्यादा है। रांची जिला शिक्षा का महत्वपूर्ण

केंद्र माना जाता है। यहां सरकारी एवं गैर सरकारी दोनों संस्था विद्यमान रूप से चलाई जाती है।

गुमला जिलाः रांची जिला से अलग कर 1983 में गुमला जिला का निर्माण किया गया। यहाँ की जनसंख्या 10, 25,213 और साक्षरता दर 75.55 प्रतिशत है।

लोहरदगा जिलाः इस जिले का निर्माण 1883 में रांची से अलग कर किया गया। यह जिला सबसे न्यूनतम जनसंख्या वाला जिला है। इसकी जनसंख्या 4,61,790 और साक्षरता दर 67. 61 प्रतिशत है। इसकी प्रखंडों की कुल संख्या 7 है।

खूंटी जिलाः इस जिला का निर्माण 12 सितंबर 2007 को रांची से अलग कर किया गया था। इसमें प्रखंडों की कुल संख्या 6 है। यहाँ की कुल जनसंख्या 5,31,885 और साक्षारता 63.86 प्रतिशत है।

सिमडेगा जिलाः इस जिला का निर्माण 30 अप्रैल 2001 को गुमला जिला से अलग कर किया गया। यहाँ की कुल जनसंख्या 5,99,578 और साक्षरता दर 67.99 प्रतिशत है। जनसँख्या सम्बन्धी उपरोक्त आंकड़े का प्रयोग 2011 की जनगणना के अनुसार किया गया है। दक्षिणी छोटानागपुर में शिक्षा का विकास तीव्र गति से हुआ है। यहां पुस्तकालयों, स्कूलों, कॉलेजों, तकनीकी शिक्षा सभी क्षेत्र में विकास हुआ है। शिक्षा के साथ शिक्षण संस्थाओं का भी महत्व काफी है। यहां सरकारी एवं गैर सरकारी दोनों तरह की संस्थाएं चलाई जाती है। यधपि झारखण्ड की शिक्षा पर बहुत शोध हुआ है लेकिन दक्षिणी छोटानागपुर के गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थानों पर शोध नहीं हुआ है। इसी शोध विषय का कार्य क्षेत्र इसी सीमा के अंतर्गत किया जाएगा।

(1.1) साहित्य समीक्षाः

शिक्षा और शिक्षण संस्थान का अभ्युदय बहुत पहले से ही ही होता आया है। शिक्षण साहित्य में शोध विषय से संबंधित अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं । अध्ययन किए गए साहित्य का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

- मुजफ्फर हुसैन की पुस्तक ''मुस्लिम कल्याणकारी योजना एवं उसके शैक्षणिक संस्थान'' में दक्षिणी छोटा नागपुर में शैक्षणिक विकास एवं मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं के कारण किस तरह से समाज पर प्रभाव उत्पन्न किया, इस विषय पर प्रकाश डाला गया है लेकिन विस्तार से गैर मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं को समझाया नहीं गया है।

- मोहम्मद इलियास की पुस्तक ''मौलाना आजाद की स्मृति'' में दक्षिण छोटानागपुर में शिक्षक के कारण किस तरह से समाजे पर प्रभाव उत्पन्न किया, इस विषय पर मुस्लिम संस्थान का अभाव है।
- शाहिद हसन की पुस्तक ''इंडियन मुस्लिम्स'' में शिक्षा के कारण किस तरह से भारत से झारखंड राज्य तक शिक्षा का विकास पर प्रभाव पड़ा लेकिन गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण सिंस्थाओं का अध्ययन का अभाव है।
- मोहम्मद मुजफ्फर हुसैन की पुस्तक ''झारखंड के मुसलमान'' में दक्षिणी छोटा नागपुर में मुसलमान ने समाज पर क्या प्रभाव उत्पन्न किया, इस विषय पर प्रकाश डाला गया है लेकिन महिला शिक्षा का आभाव है।
- मुजफ्फर हुसैन की पुस्तक ''मुसलमानों में शिक्षा संस्कार एवं अल्पसंख्यक संस्थान की भूमिका'' में दक्षिणी छोटानागपुर में मुस्लिम शिक्षा एवं अल्पसंख्यक शिक्षा का उल्लेख किया गया है लेकिन मुस्लिम संस्थान का अध्ययन का अभाव है।

(1.2) शोध रिक्तिः

उपरोक्त विद्वानों एवं इतिहासकारों के लेखन से शिक्षा पर अनेक पुस्तक और विस्तृत जानकारी मिलती है, लेकिन दक्षिणी छोटानागपुर में गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थानों की जानकारी बहुत ही कम साहित्य में उपलब्ध है। झारखंड में शिक्षा पर तो अनेक शोधकार्य हुए हैं, लेकिन गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थानों पर शोध कार्य गौण है। अतः इस क्षेत्र में शिक्षा के विकास के स्तर को ऊंचा उठाने हेतु गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थानों द्वारा किए जा रहे प्रयासों का विस्तृत अध्ययन कर इस शोध कार्य अंतराल को भरा जा सकता है।

(1.3) शोध की समस्या

शोध समस्या से तात्पर्य उन तथ्यों से है जिनकी खोज की जानी है

- दक्षिणी छोटानागपुर में गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थान के विकास में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का समझ मे एक अंतराल मौजूद है।
- प्राथमिक शिक्षा के स्वरूप में विकास क्रम की में जानकारी के अतंगर्त मदरसा शिक्षा एवं स्कूली शिक्षा के बारे में प्रर्याप्त जानकारी नहीं है।

- दक्षिणी छोटानागपुर में माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के प्रारूपों पर प्रर्याप्त प्रकाश नहीं ड़ाला गया है।
- दक्षिणी छोटागपुर में तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के जानकारी का आभाव है।
- मुस्लिम महिला में शिक्षा का प्रसार की पहुंच अंतिम व्यक्ति तक हो पा रही है जानकारी का आभाव है।

(1.4) शोध का उद्देश्यः

प्रत्येक शोध कार्य कुछ निश्चित उद्देश्यों से प्रेरित होते हैं। यह उद्देश्य ही कार्यों को एक निश्चित दिशा प्रदान करते हैं। प्रस्तावित शोध प्रबंध निम्नलिखित उद्देश्यों से अभिप्रेरित हैं।

- गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थान के विकास की पृष्ठभूमि का परीक्षण करना ।
- मुस्लिम शिक्षण संस्थान में प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा का विकास क्रम को स्पष्ट करना।
- मुस्लिम शिक्षण संस्थान के संरचनात्मक विकास का परीक्षण प्रस्तुत करना।
- महिलाओं के शिक्षा के विकास को स्पष्ट करना ।

(1.5) शोध की परिकल्पनाः

प्रस्तुत शोध प्रबंध की प्रस्तावित परिकल्पना निम्न है–

- गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थान के विकास में समस्त दक्षिणी छोटानागपुर में एक प्रकार की पृष्ठभूमि जिम्मेवार है।
- दक्षिणी छोटानागपुर के शैक्षनिक पाठ्यक्रम में एकरूपता पाई जाती है।
- तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा का विकास दक्षिणी छोटानागपुर में तेजी से हो रहा है।
- दक्षिणी छोटानागपुर के समस्त जिलों में शिक्षा का प्रभाव महिलाओं के विकास में समान रूप से पड़ा है।

(2) शोध प्रारूपः

प्रस्तावित शोध का शोध प्रारूप निम्नलिखित है –

(2.1) शोध विधिः

दक्षिणी छोटानागपुर में शैक्षणिक विकास में गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं का योगदानः'' साक्षात्कार अनुसंधान विधि'' का अनुसरण करते हुए किया जायेगा। प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से तथ्य संकलित किए जाएंगे। शोध कार्य में संख्यात्मक एवं गुणात्मक डेटा का उपयोग किया जाएगा। शोध कार्य में तथ्यों के एकत्र करने हेतु मुस्लिम शिक्षण संस्थान संबंधी दस्तावेजों, प्रकाशनों, वार्षिक रिपोर्टों, अभिलेखागार स्रोतों, पुस्तकालयों, समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं, डायरी, गजेटियर, गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थानों के वरिष्ठ शिक्षकों एवं प्रधानाचार्य, छात्र–छात्राओं तथा मदरसा एवं पढ़ाने वाले मौलवी के साथ साक्षात्कार किया जाएगा। शोध अध्ययन में सर्वेक्षण के माध्यम से मूल्यांकन किया जाएगा। विभिन्न दस्तावेजों, साक्षात्कारों सर्वेक्षण से एकत्र की गई जानकारी का उपयोग कर मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं के विकास के महत्वपूर्ण घटनाओं, परिवर्तनों तथा अल्पसंख्यक छात्र छात्राओं में सकारात्मक बदलावों का अध्ययन शामिल किया जायेगा।

(2.2) आंकड़ों का संग्रह हेतु उपकरण एवं तकनीकः

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत प्राथमिक पद्धति के रुप में साक्षात्कार विधि के विश्लेषण का उपयोग करते हुए गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया जायेगा द्य वर्तमान शोध में प्राथमिक स्रोतों को इकठ्ठा करने के लिए सरकारी दस्तावेज, स्कूल, कॉलेज, मदरसों शिक्षण संस्थान आदि के गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं के रिपोर्ट का अध्ययन किया जायेगा। द्वितीयक स्रोतों को इकठ्ठा करने के लिए पुस्तकालय, साहित्य आदि का उपयोग किया जाएगा। शैक्षणिक विकास में मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं के योगदान के संदर्भ में शिक्षक, प्रधानाध्यापक के साथ साक्षात्कार कर ऐसे तथ्यों पर अंतर्दृष्टि मिल सकती है, जो हमें लिखित स्रोतों में उपलब्ध नहीं मिल पाती है। स्कूल, कॉलेज, मदरसा, पुस्तकालय रिपोर्ट रिकॉर्ड प्रकाशन तथा स्थानीय दस्तावेजों का विश्लेषण किया जाएगा। प्रश्नावली का भी उपयोग कर डेटा एकत्र किए जाएंगे। इसके साथ ही विभिन्न दस्तावेजों पुस्तकों आदि जो डिजिटल वेबसाइट पर उपलब्ध है, का भी उपयोग किया जायेगा। संग्रहित डेटा के सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाएगा।

(2.3) आंकड़ों का विश्लेषणः

प्रस्तावित शोध में तथ्यों के उपयोग हेतु संग्रह किए गए विभिन्न प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों की वैधता तथा विश्वसनीयता की जांच की जाएगी। मात्रात्मक मूल्यांकन के अंतर्गत सर्वेक्षण, साक्षात्कार आदि से प्राप्त मात्रात्मक आंकड़ों का विश्लेषण किया जाएगा। इससे हमें दक्षिणी छोटानागपुर में शैक्षणिक विकास में गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं के योगदान की जानकारी मिलेगी। विभिन्न दस्तावेजों, रिपोर्ट एवं प्रकाशित साहित्य का विश्लेषण किया जाएगा ताकि इन क्षेत्रों में छात्र की उन्नति हेतु गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्य एवं उनके परिणामों की प्राप्ति हो सके। मुस्लिम शिक्षण संस्थान द्वारा किए जा रहे शिक्षा में योगदान के व्यापक समझ बनाने हेतु विभिन्न डाटा का उपयोग करना शामिल है।

(3) शोध कार्य का महत्वः

प्रस्तुत शोध कार्य की महत्व अधिक प्रासंगिक है क्योंकि यह जनजातीय बहुल राज्य, जो दक्षिणी छोटानागपुर के शैक्षणिक विकास के विभिन्न पहलुओं पर गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थान के प्रभाव को समझने का प्रयास करता है। यह शोध न केवल मुस्लिम शिक्षण संस्थान के प्रभाव का मूल्यांकन करेगा अपितु छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक भागीदारी में आए परिवर्तनों की भी जांच की जायेगी। इस शोध का निष्कर्ष गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्वानों की नीतियों का मार्गदर्शन करेगा। यह शोध दक्षिणी छोटानागपुर के शिक्षण संस्थानों में जागरूकता बढ़ाने तथा उन्हें सक्रिय भागीदारी देने में प्रेरित करेगा।

(4) वर्तमान समय में विषय की उपादेयता एवं आवश्यकताः

प्रस्तावित साक्षात्कार विश्लेषण में दक्षिणी छोटानागपुर में गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थानों के शैक्षणिक विकास हेतु प्रभावी रणनीति बनाने में सहायक है वर्तमान समय में हमारा समाज शैक्षणिक, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता जैसे गंभीर मुद्दों से जूझ रहा है। जिसका प्रभाव मुस्लिम शिक्षण संस्थानों के सन्दर्भ में अध्ययन कर शिक्षा में विकास का आकलन किया जा सकता है। वर्तमान में शिक्षा पर या शिक्षण संस्थान पर कई पुस्तकें देखने को मिलती है परंतु उसमें गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थान से

संबंधित कुछ ही पुस्तक देखने को मिलती है। अतः उपलब्ध पुस्तकें तथा सामग्री के माध्यम से शैक्षणिक विकास में मुस्लिम शिक्षण संस्थानों की जानकारी प्रस्तुत प्रस्तावित शोध के माध्यम से किया जा सकता है।

(5) वर्तमान ज्ञान में योगदानः

प्रस्तावित शोध विषय विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक ज्ञान में योगदान करने की क्षमता रखता है। इसका विश्लेषण कर शिक्षा का विकास, सामाजिक कल्याण, सांस्कृतिक विकास और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और शिक्षा के तकनीकी विकास कर छात्रों के प्रति जागरूकता पैदा करके मौजूदा अंतराल को भरा जा सकता है। इसके अलावा पाठ्यक्रम में एकरूपता लाकर गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थान के संरचनात्मक विकास प्रस्तुत कर सकता है

(6) भविष्य के लिए कार्यः

प्रस्तावित शोध कार्य भविष्य में शोध का आधार बनेगा, जिसके फलस्वरूप विभिन्न प्रकार का कार्य भविष्य में किये जा सकते हैं। गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं के अध्ययन करने पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है स्थानीय तथा विश्व स्तर पर शैक्षणिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया जा सकते हैं। प्रस्तावित शोध कार्य से संबंधित निम्नलिखित कार्य किये जा सकते हैं।

- झारखण्ड में मुस्लिम शिक्षण संस्थान के विकास में मुस्लिम महिला शिक्षा का योगदान।
- सामाजिक सुधार में मुस्लिम शिक्षण संस्थान का योगदान।
- सामाजिक चेतना एवं जागरूकता के विकास में मुस्लिम शिक्षण संस्थान का योगदान।

(7) प्रस्तावित अध्यायः

प्रस्तावित शोध–प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों के अंतर्गत प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा।

भूमिका

प्रथम अध्याय	– ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
द्वितीय अध्याय	– स्कूली शिक्षा की रूपरेखा
तृतीय अध्याय	– माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा
चतुर्थ अध्याय	– तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा
पंचम अध्याय	– शिक्षित मुस्लिम महिलाओं का समाज में योगदान

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ

परिशिष्ट

संदर्भः

दक्षिणी छोटा नागपुर के शैक्षणिक विकास में गैर सरकारी मुस्लिम शिक्षण संस्थानों में योगदान के गहन अध्ययन हेतु निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया जायेगा।

प्राथमिक स्रोतः

- गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थानों के रिकार्ड्स
- मौखिक इतिहास
- समाचार–पत्र एवं पत्रिका
- डायरी
- साक्षात्कार
- अभिलेखागार

द्वितीयक स्रोतः

- शैक्षणिक पत्रिकाएं
- सरकारी रिपोर्टें और दस्तावेजों
- साहित्य

- पुस्तकालय
- ऑनलाइन संसाधन और वेबसाइटें
- शैक्षणिक संस्थानों की वेबसाइटें और प्रकाशन

संदर्भ सूचीः

1. मुजफ्फर हुसैन, मुस्लिम कल्याणकारी योजना एवं उसके शैक्षणिक संस्थान, झारखंड झरोखा, 2021
2. भारत की जनगणना रिपोर्ट, 2011
3. मोहम्मद इलियास, मौलाना आजाद की स्मृति, ISDR, 2013
4. मुजफ्फर हुसैन, मुसलमानो, में शिक्षा, संस्कार एवं अल्पसंख्यक संस्थान की भूमिक, झारखंड झरोखा
5. मुजफ्फर हुसैन, झारखंड के मुसलमान, झारखंड झरोखा, 2023
6. झारखंड सरकार का नोटिफिकेशन, राज्य में संचालित विभिन्न प्रज्ञा केंद्र से प्राप्त सूचना एवं साक्षात्कार पर आधारित।
7. टी० पी० हग, ए डिक्शनरी ऑफ इस्लाम, लंदन, 1885
8. मेहली लीवेंस तिर्की, फादर कांस्टेंट लीवेंस एवं छोटा नागपुर (1885 1892), सैलेशियन पब्लिशर्स, रांची, 1993
9. मान गोविंद बनर्जी, छोटा नागपुर की ऐतिहासिक रूपरेखा, एजुकेशन प्रिंट, रांची, 2000
10. शाहिद हसन, ‘‘इंडियन मुस्लिमस ‘‘कलपाज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009